मोल बुक्स: 'मोल और पुलिस की जुगलबंदी', 'बेकरी तक का सफ़र', और 'वुफ़ी की मायूसी का कारण'

----------"समाज सेवी" संकलन से----------

मोल...बंदा है अनमोल...सिखाए
सबको अच्छी बातें...बोले ऐसे बोल

अरमान जे सर्ना

MOLE TOWN POLICE

VETERINARY CLINIC

Copyright © 2016 Armaan J. Sarna. All rights reserved.

ISBN
978-1-4828-7050-3 (sc)
978-1-4828-7049-7 (e)

All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced by any means, graphic, electronic, or mechanical, including photocopying, recording, taping or by any information storage retrieval system without the written permission of the publisher except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

Because of the dynamic nature of the Internet, any web addresses or links contained in this book may have changed since publication and may no longer be valid. The views expressed in this work are solely those of the author and do not necessarily reflect the views of the publisher, and the publisher hereby disclaims any responsibility for them.

Print information available on the last page.

To order additional copies of this book, contact
Partridge India
000 800 10062 62
www.partridgepublishing.com/india
orders.india@partridgepublishing.com

04/01/2016

PARTRIDGE

MOLE BOOKS: MOLE CALLS THE POLICEMAN, A VISIT TO THE BAKER & MOLE TAKES WOOFIE TO THE VET

From the series "Community Helpers"

Mole ...is a very good soul...in teaching children good things .....He plays an important role !

ARMAAN J. SARNA

मोल और पुलसि की जुगलबंदी

मोल सुबह उठते ही अपनी माँ के पास भगा जो सब्ज़ियों के बग़ीचे में थी। पिछली दो सुबहों से मोल माँ की सब्ज़ियाँ ग़ायब हो रही थीं! मोल ने देखा कि आज भी कई गोभियाँ और शिमला मिर्चें ग़ायब थीं। मोल उलझन में पड़ गया! आख़िर ये सब्ज़ियाँ जा कहा रही थीं? उसे यह सब बहुत ही रहस्यमयी मालूम होता था।

क्योंकि आज स्कूल की छुट्टी थी, मोल ने अपने कमरे की खिड़की से सब्ज़ियों के बग़ीचे पर एक कड़ी नज़र बनाए रखने का फ़ैसला किया, ताकि वो यह पता लगा सके की एक एक करके सारी सब्ज़ियाँ ग़ायब कैसे हो रही थीं। मोली भी उसके साथ इस कोशिश में जुट गयी। वे दोनों मिलकर सब्ज़ियों पर नज़र रखने लगे।

ऐसे ही पहरा देते देते मोल और मोली ने देखा की मूसा और मौसा, मोहल्ले के सबसे नकारा चूहे और छँटे हुए बदमाश, बाढ़ फाँदकर अपने कंधों पर ख़ाली पोटलियाँ लादे बगीचे में घुसे चले आ रहे थे। मोल एक बार फिर चक्कर में पड़ गया; भला मूसा और मौसा का उनके सब्ज़ी बाग़ान में क्या काम?? और माँ तो घर पर भी नहीं है!

मोल और मोली जब खुद मूसा और मौसा को रसीले लाल टमाटर और पत्तेदार गोभियाँ तोड़कर अपनी पोटलियों में भरते देखते हैं तो अपनी आँखों पर भरोसा नहीं कर पाते। अब मोल समझ जाता है की यह मूसा और मौसा ही थे जो सब्ज़ियाँ चुरा रहे थे, "कैसी घिनौनी हरकत है ये", वह सोचता है। चोरी है ये, सरासर चोरी!!!

अपनी खिड़की से बाहर झांकते हुए मोल देखता है कि पीटर पुलिसवाला बाहर गली में अपनी पुलिस की गाड़ी में बैठा था। मोल दबे पाँव अपने घर के गेट तक जाता है। वहाँ पहुँचकर मोल इशारे से पीटर को अपने पास बुलाता है! पुलिसकर्मी वे समाज सेवक होते हैं जो इस बात का ध्यान रखते हैं कि सभी लोग क़ानून के मुताबिक़ चलें। एक देश का क़ानून उन नियम-क़ायदों को कहते हैं जिनका पालन सभी को करना होता है।

मोल धीमी आवाज़ में पीटर पुलिसवाले को मूसा और मौसा की खबर देता है। वह पीटर पुलिसवाले से चोरों को पकड़ने में उसकी मदद माँगता है। मूसा और मौसा, बिना पूछे किसी और का सामान लेकर चोरी कर रहे थे जो की एक बहुत बुरी बात है! वे क़ानून को तोड़ रहे थे!

पीटर पुलिसवाला ने दूसरे पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर मोल के घर को बड़े-बड़े जालों से घेर लिया। फिर पीटर ने माइक में चीखकर कहा, "मूसा और मौसा, तुम दोनों को मोल के घर से सब्ज़ियाँ चुराते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया है। जहाँ हो वहीं रुक जाओ! भागने की कोशिश भी मत करना क्योंकि हम ने मोल के घर को चारों ओर से घेर लिया है, अब तुम्हारा बच पाना नामुमकिन है!"

मूसा और मौसा यह सुनकर सकते में आ गए... उन्होंने फटाफट अपनी पोटलियाँ वहीं छोड़ दीं और बचकर भागने लगे... लेकिन पीटर पुलिसवाले और अन्य पुलिसकर्मियों ने मिलकर उन दोनों को समय रहते पकड़ लिया!

मूसा और मौसा को पुलिस की गाड़ी में पुलिस थाने लेजाया गया और जेल में दल दिया गया। पुलिस थाना उस जगह को कहते हैं जहाँ सभी पुलिसकर्मी मिलकर काम करते हैं और यह पक्का करते हैं की समाज के सभी लोग सुरक्षित रहें।

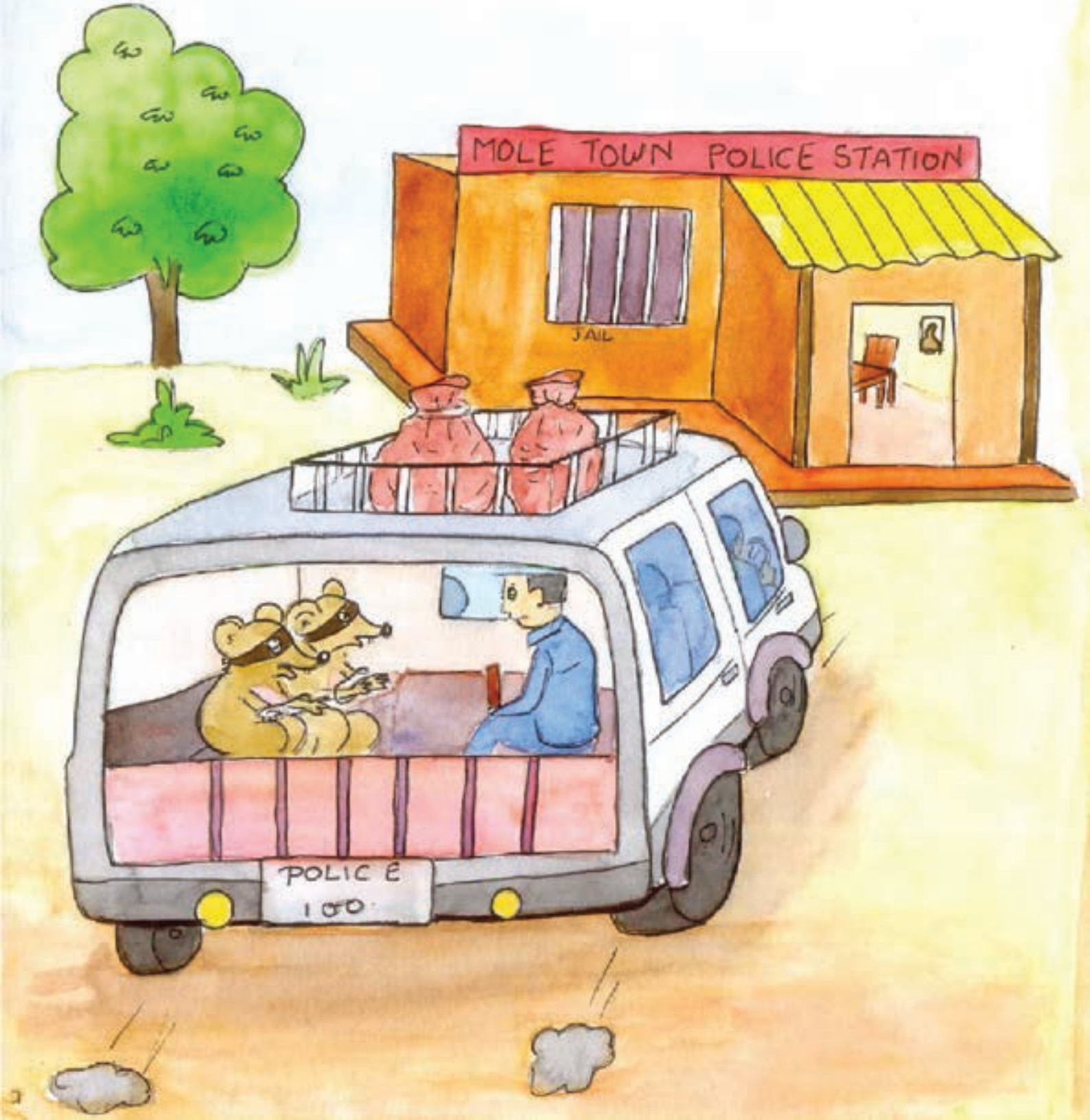

जेल पहुँचकर पीटर पुलिसवाले ने मूसा और मौसा से पूछताछ की और यह जानना चाहा कि उन्होंने चोरी की सब्ज़ियाँ कहाँ जमा कर रखी हैं? दोनों ने बताया कि सब्ज़ियाँ मोल नगर के पौधा घर में छिपा रखी हैं। पीटर पुलिसवाले ने बाक़ी पुलिसकर्मियों को सारी सब्ज़ियाँ बरामद कर मोल माँ को लौटा देने का आदेश दिया।

पीटर पुलिसवाले ने चूहा चाची और चूहा चाचा को पुलिस थाने बुलाकर मूसा और मौसा को घर वापस ले जाने के लिए कहा। निकलने से पहले पीटर पुलिसवाले ने मूसा और मौसा को ख़ूब समझाया कि दूसरों की चीज़ें चुराना ग़लत है, और अगर उन्होंने फिर कभी ऐसा किया तो दोनों को जेल में चक्की पीसनी पड़ेगी। चूहा चाची और चूहा चाचा अपने बच्चों की इस हरकत पर बहुत शर्मिंदा हुए।

उस शाम जब पीटर पुलिसवाला मोल के घर चोरी की सब्ज़ियाँ लेकर पहुँचा तो मोल माँ, मोल और मोली उसे देखकर बेहद ख़ुश हुए! मोल तो ख़ुशी के मारे तालियाँ बजाने लगा। मोल माँ, मोल और मोली ने सब्ज़ी चोरों को पकड़ने में उनकी मदद करने के लिए पीटर पुलिसवाले को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

बेकरी तक का सफ़र

मोल माँ, मोल, और मोली, मोल नगर की बेकरी पर पहुँचते है। रुस्तम नानवाला मुस्कुराते हुए उनका स्वागत करता है। आज मोल माँ कुछ ताज़ा ब्रेड और नानखटाई लेने आयीं थी। बेकरी उस दुकान को कहते हैं जहाँ से हम ताज़ा ताज़ा ब्रेड, केक, और बिस्किट जैसी चीज़ें ख़रीद सकते हैं।

बेकरियाँ चलाने वाले समाज सेवी, जिन्हें बेकर कहा जाता है, अलग अलग तरह की ब्रेड, केक, और बिस्किट वग़ैरह बनाते हैं। रुस्तम की बेकरी हमेशा ताज़ी ब्रेड और मीठे केक की ख़ुशबू से महक रही होती थी जो मोल और मोली को बहुत अच्छा लगता था। इस ख़ुशबू हमेशा उनके मुँह में पानी आ जाता था; आह! आज रुस्तम नानवाले ने कहा, "क्या तुम मेरी रसोई में आकार देखना चाहोगे कि मैं ब्रेड कैसे बनता हूँ? मोल और मोली उत्साह के मारे उछल पड़े!

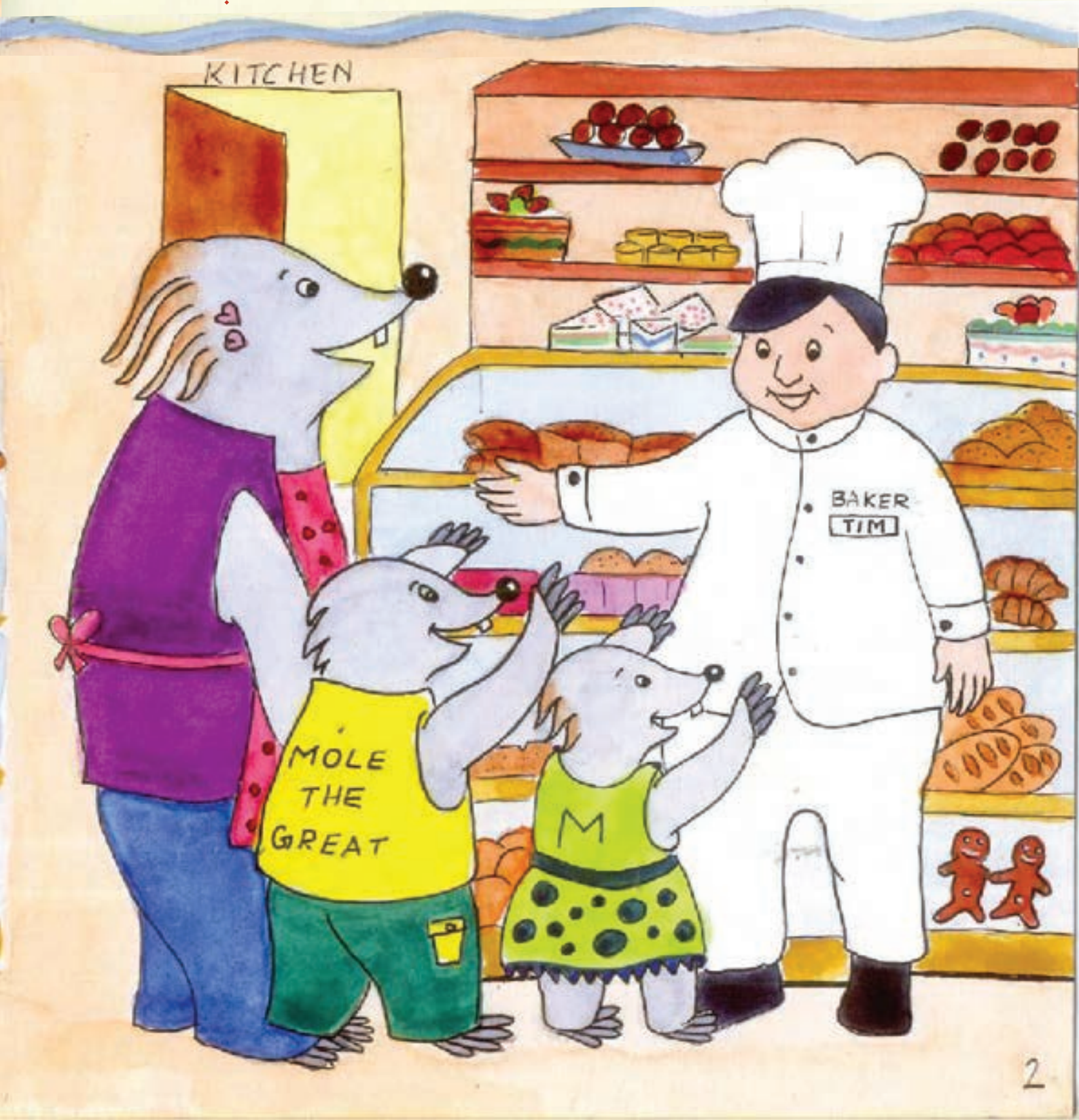

मोल माँ से पूछ लेने के बाद रुस्तम नानवाला मोल और मोली को बेकरी के पीछे अपनी रसोई में ले गया। “यहाँ हम ब्रेड तैयार करते हैं,” उसने कहा, “पहले हम आटे, ख़मीर, और चुटकिभर नमक को एक बड़े कटोरे में डालकर उसे अपने हाथों से मिलते हैं। फिर ज़रा गर्म पानी, थोड़ा सा तेल और शहद डालकर उसे एक मुलायम लोई में गूँथ लेते हैं।” मोल और मोली ने ग़ौर किया कि रुस्तम नानवाले कि रसोई में और भी मददगार थे।

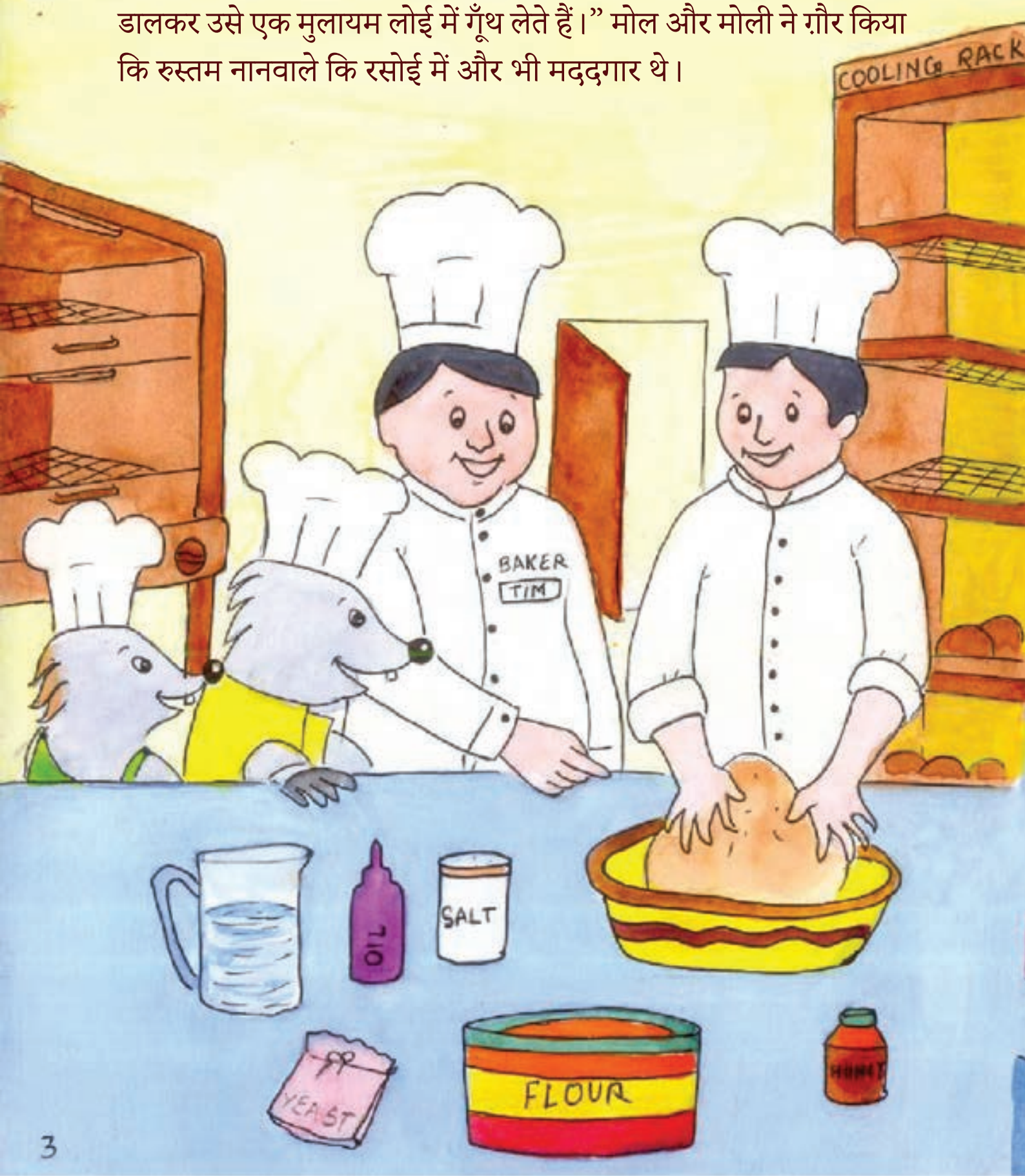

“हमारा अगला क़दम होता है ब्रेड के साँचे पर तेल लगाकर गुँथे हुए आटे को उसमें डालना और बराबर फैला लेना। फिर हम इसे एक घंटे तक ख़मीर उठने के लिए छोड़ देते हैं, जब तक कि आटा फूलकर साँचे को पूरा न भर दे,” रुस्तम नानवाले ने समझाते हुए कहा। “क्या में साँचे पे तेल लगाने और आटा डालने में आपकी मदद कर सकता हूँ रुस्तम साहब?” मोल ने उत्सुकता से पूछा। रुस्तम नानवाले ने मोल को एक साँचे में तेल लगाने और आटा डालने दिया। मोल की ख़ुशी का ठिकाना न था।

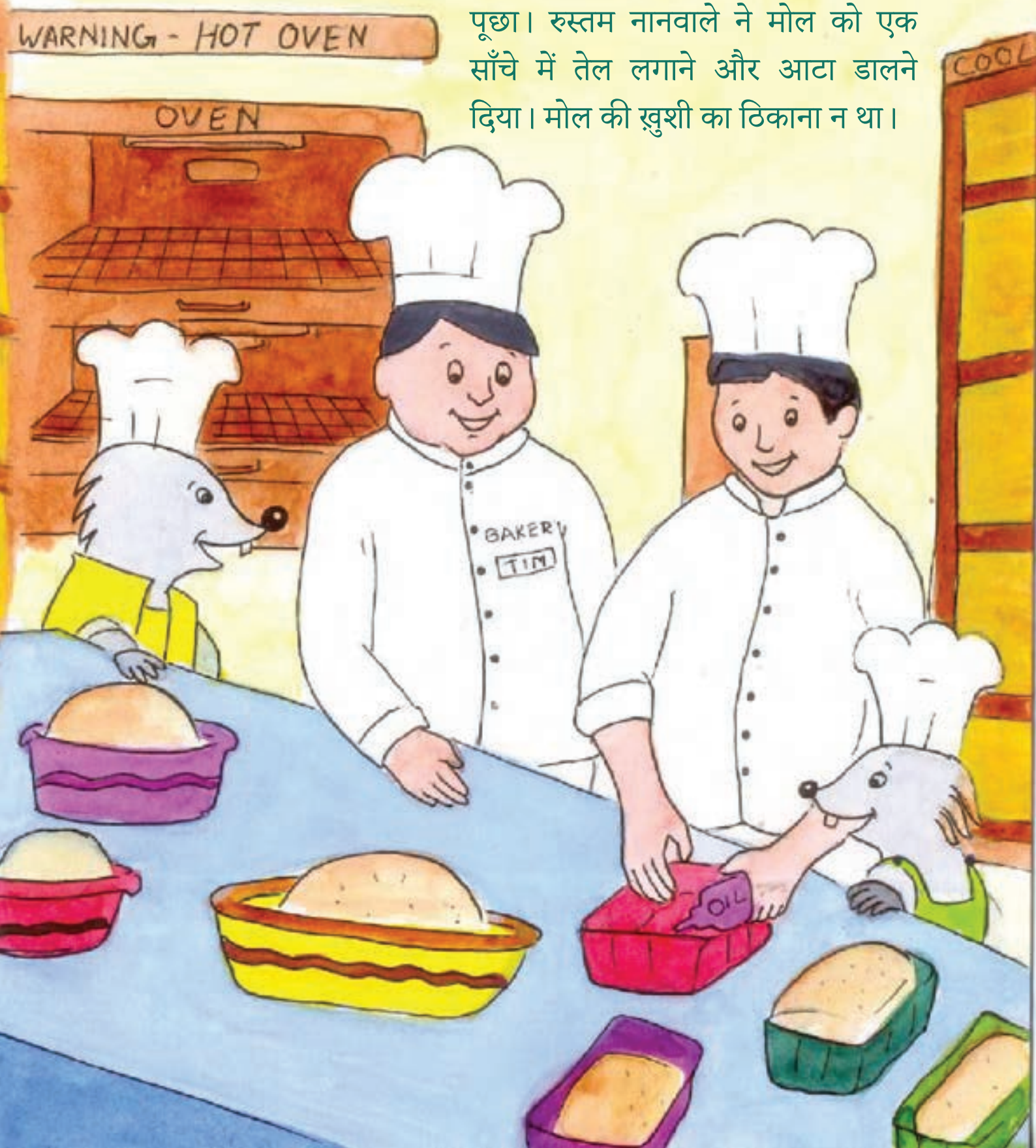

"अब हम इसे भट्टी में पकने देंगे जब तक कि ब्रेड और फूलकर ऊपर न उठ जाए और उसका रंग सुनहरा न हो जाए," रुस्तम ने कहा। मोल और मोली ने भट्टी के अंदर झाँका। "देखो," मोल ने उत्साह से कहा, "मैं भट्टी में ब्रेड को फूलता हुआ देख पा रहा हूँ।" "ज़रा संभलके," रुस्तम ने कहा, "भट्टी काफ़ी गर्म है!" रुस्तम ने मोल और मोली को दस्ताने पहनाये।

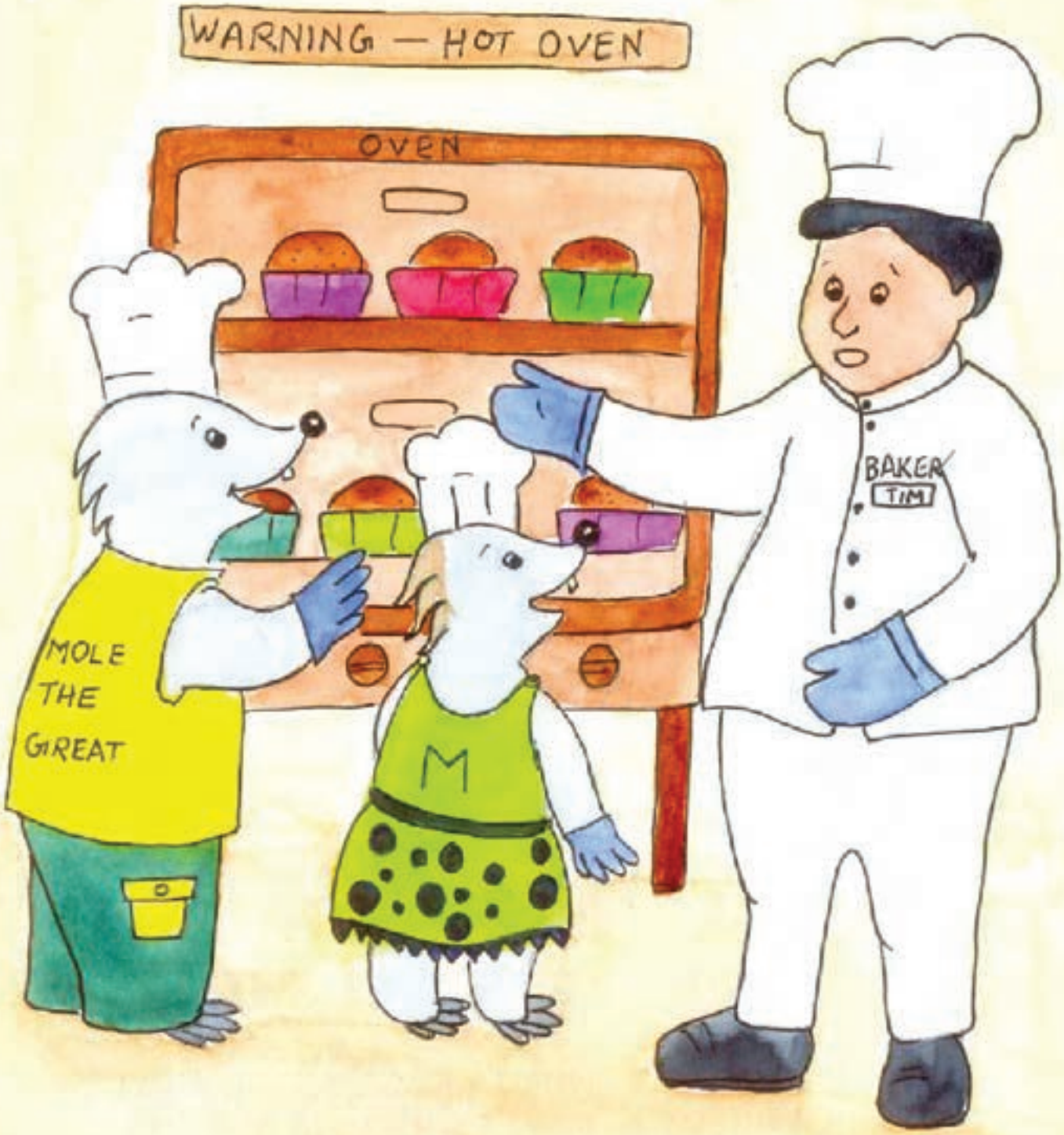

"जब ब्रेड भट्टी में ठीक से फूल जाती है और उसका रंग सुनहरा हो जाता है तब हम उसे बाहर निकालकर ठंडा होने के लिए रख देते हैं," रुस्तम ने कहा। मोल और मोली को सीधा भट्टी से ताज़ा ब्रेड की महक आ रही थी। आऽऽऽऽऽऽह... स्वादिष्ट! मोल ने ख़ुशी से मचलकर अपने ओठों पर जीभ घुमायी। मोल को ताज़ा ब्रेड से बने सैंडविच खाना बेहद पसंद था।

रुस्तम, मोल, और मोली लौटकर बेकरी की ओर आए। रुस्तम ने कहा, "हम यहाँ रक़म रक़म की ब्रेड तैयार करते हैं जैसे कि फ़ार्महाउस ब्रेड, सैंडविच ब्रेड, ब्राउन ब्रेड, लहसुन वाली ब्रेड, खट्टी ब्रेड, और चपटी ब्रेड। इस ही के साथ हम ब्रेडरोल, बेगल, क्रासौं, क्रम्पेट, बगेट, और पाव भी बनाते हैं। स्वादिष्ट केक, बिस्किट और नानखटाई भी हमारे यहाँ बनायी जाती है!"

मोल माँ ने सैंडविच ब्रेड, फ़ार्म्हाउस ब्रेड और कुछ ताज़ा नानखटाई ख़रीदी। रुस्तम ने मोल और मोली दोनों को एक एक ताज़ा बने आदमीनुमा बिस्किट दिए जिसे पाकर वे बहुत खुश हो उठे। एक बड़ी मुस्कान के साथ उन्होंने रुस्तम का शुक्रिया अदा किया।

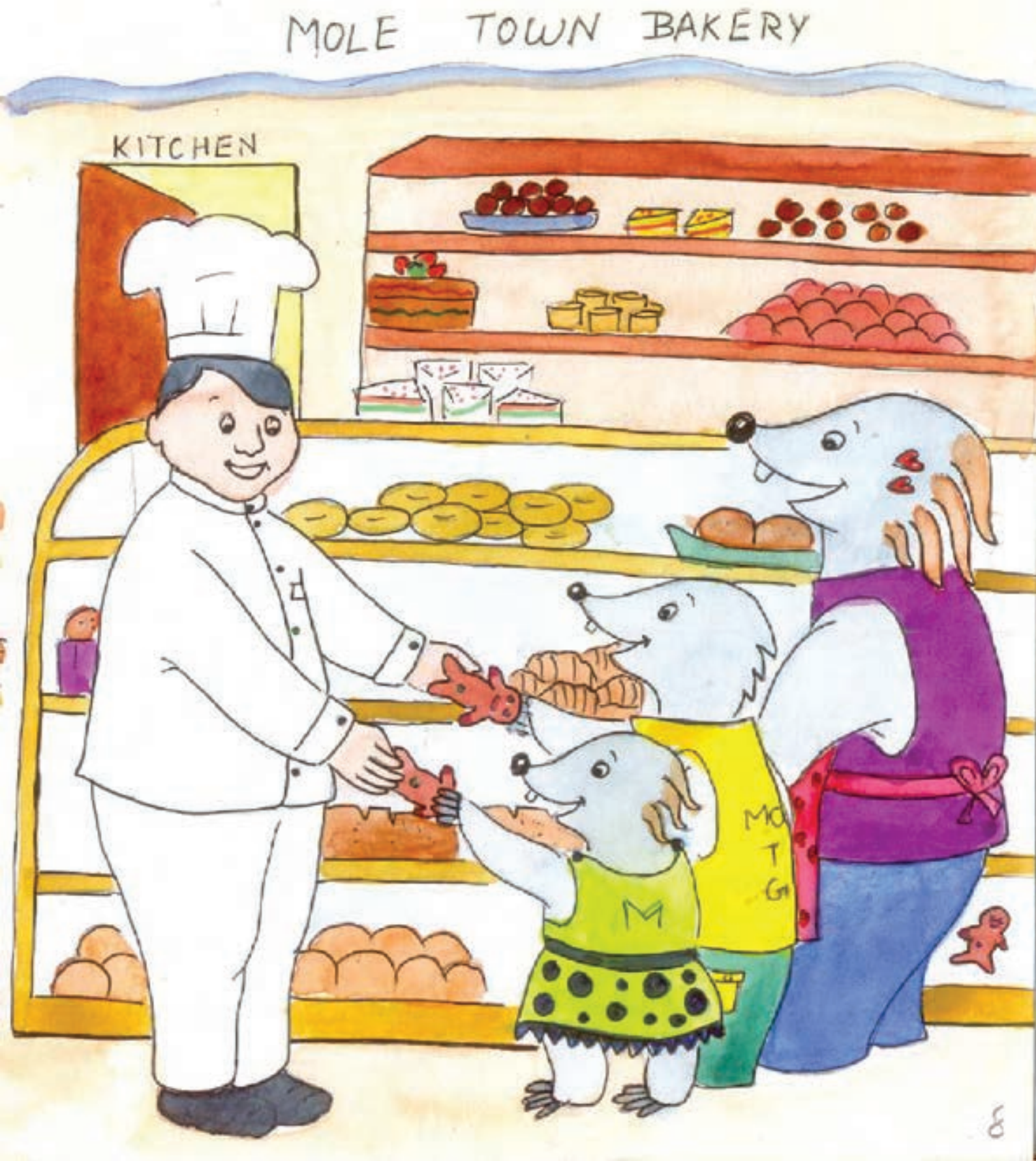

घर लौटते वक़्त मोल माँ बाज़ार में रुकीं। यहाँ से उनने कुछ ताज़ा मक्खन ख़रीदा, मोल ने भी चीज़ और मोली ने स्ट्रोबेरी जैम लिया। बाज़ार में काम करने वाले व्यक्ति ने उनकी ख़रीदारी करने में मदद की।

शाम को चाय-नाश्ते के समय पूरे मोल परिवार ने मक्खन, चीज़ और जैम के साथ उस दिन ख़रीदी ताज़ा ब्रेड का लुत्फ़ उठाया। "आह, क्या बात! मज़ा ही आ गया!" मोल ने कहा। मोल माँ उसकी ओर देखकर मुस्कुरा दीं।

वुफ़ी की मायूसी का कारण

मोल और मोली अपने पालतू कुत्ते वुफ़ी के साथ खेलना चाहते थे। "जाओ वुफ़ी," मोल ने वुफ़ी की पसंदीदा पीली गेंद फेंकते हुए कहा जिससे कि वो भागकर उसे पकड़ता, लेकिन बस अपना मुँह नीचे करके ज़मीन पर पड़ा रहा। मोल और मोली को कुछ समझ नहीं आया, आख़िर गेंद के पीछे भागना तो वुफ़ी का सबसे प्रिय खेल था।

मोल माँ बाहर बग़ीचे में आयीं और वुफ़ी की ओर देखा जो वहाँ लेटा हुआ था। "अरे बाबा," उनने कहा, "मुझे तो लगता है की वुफ़ी की तबियत कुछ ठीक नहीं; हमें उसे जानवरों के डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। "जानवरों का डॉक्टर क्या होता है माँ?" मोल ने पूछा। मोल माँ ने जवाब दिया, "जानवरों का डॉक्टर उस समाज सेवी को कहते हैं जो जानवरों की मदद करता है।"

मोल माँ, मोल और मोली, वुफ़ी को लेकर कार में बैठे और मोल नगर के जानवरों के डॉक्टर के क्लिनिक के लिए निकले। बेचारा वुफ़ी मोल की गोद में सोया हुआ था।

जानवरों की डॉक्टर का नाम था डॉक्टर रिशाला, जो अपने क्लिनिक पर आए जानवरों के साथ हमेशा बेहद प्यार से पेश आती थीं। मोल को अपनी बरी का इंतज़ार करना था तो वह वुफ़ी को अपनी बाहों में लिए लाइन में खड़ा हो गया। पहले पांडा की बरी आयी अपना पालतू हैम्स्टर दिखाने की। उसके बाद भालू की बरि थी जो अपना पालतू तोता दिखाने आया था, और उसके बाद थी मोल की बारी वुफ़ी को डॉक्टर रिशाला के पास दिखाने की!

पांडा ने अपने हैम्स्टर 'हिमेश' को डॉक्टर रिशाला की टेबल पर लेटा दिया। डॉक्टर रिशाला ने ग़ौर किया कि हिमेश के पाँव में चोट आयी थी। पहले उन्होंने घाव को साफ़ किया, और फिर उस पर मरहम लगाकर पट्टी की। फिर पांडा से कहा, "मैं नहीं चाहती कि हिमेश इस पट्टी को कुतर के उतर दे!" और हिमेश के गले में एक मुलायम पट्टा बांध दिया। आख़िर में उनने हिमेश को प्यार से सहलाया और उसे खाने के लिए एक गाजर दी! "पांडा, प्लीज़ तुम हिमेश को अगले हफ़्ते पट्टी बदलने के लिए लेकर ज़रूर आना," डॉक्टर ने कहा।

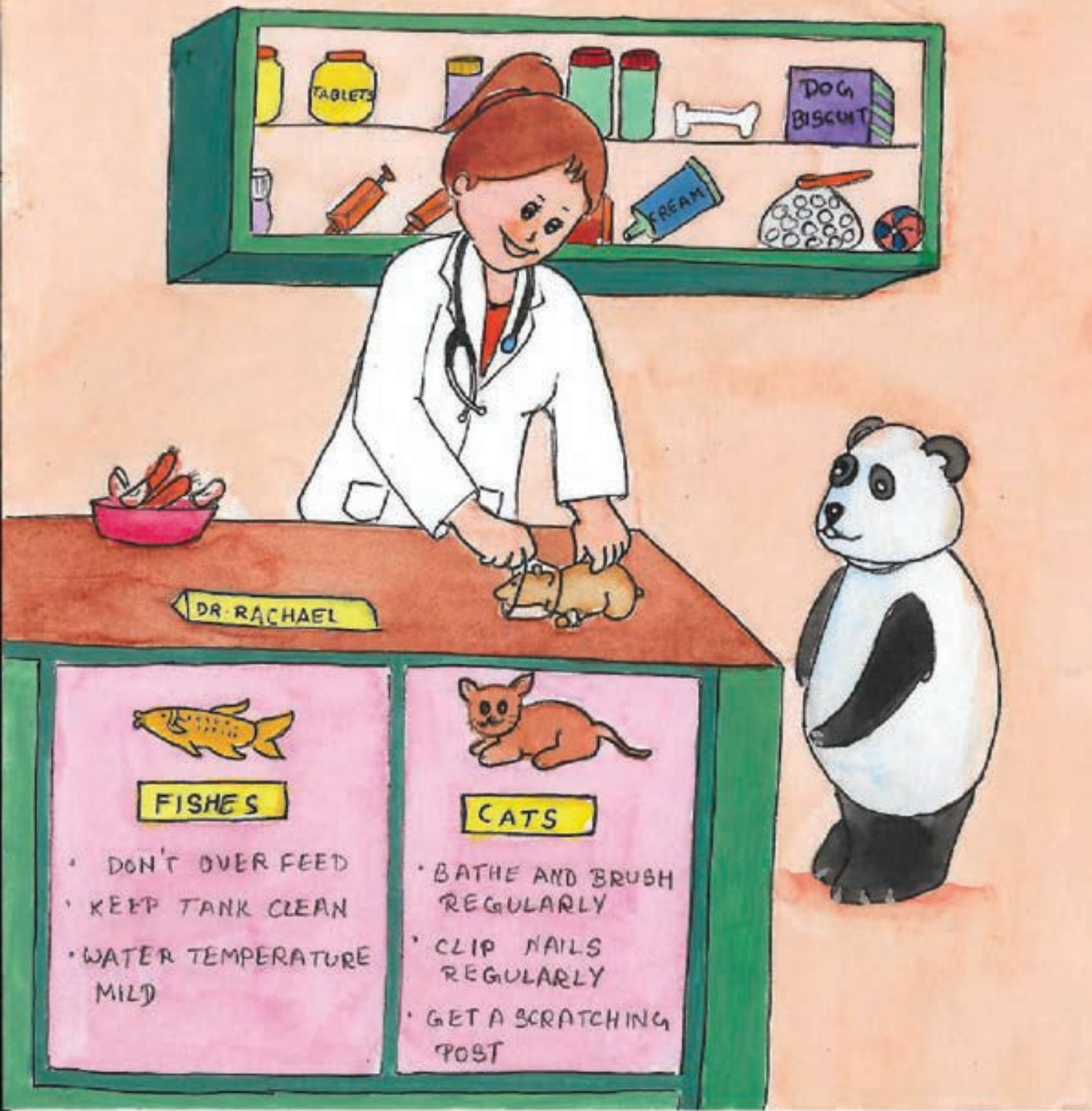

अगली बारी भालू की थी जो अपने तोते 'तारा' के घायल पंख को दिखाने आया था। डॉक्टर रिशाला ने तारा को चिड़ियों के स्टैंड पर खड़ा कर दिया और उसके पंख को साफ़ किया। फिर उसकी मरहम-पट्टी की। आख़िर में उन्होंने तारा के सर को धीमे से थपथपाया और उसे खाने के लिए एक सेव का टुकड़ा दिया जिसे वो तुरंत चट कर गयी! "कल तारा को पट्टी बदलने के लिए ले आना भालू!" डॉक्टर रिशाला ने कहा।

आख़िरकार अब वुफ़ी की बारी थी! मोल वुफ़ी की धड़कन बढ़ते महसूस कर सकता था! डॉक्टर रिशाला ने प्यार से कहा, "तुम कितने मासूम हो वुफ़ी", और उसने उत्सुकता से अपनी दुम हिलायी। वुफ़ी का जायज़ा लेने के बाद डॉक्टर ने कहा, "मुझे लगता है कि वुफ़ी का पेट ख़राब है, इस दवा कि दो बूँदें वुफ़ी के खाने में तीन दिन तक डालते रहो और वो बिल्कुल दुरुस्त हो जाएगा! डॉक्टर रिशाला ने वुफ़ी को सहलाया और उसे खाने के लिए एक बिस्किट दिया।

डॉक्टर रिशाला ने मोल माँ को वुफ़ी की दवाइयों की पर्ची दी। मोल माँ ने डॉक्टर रिशाला को शुक्रिया कहा और उन्हें उनकी फ़ीस अदा की। मोल परिवार फिर वहाँ से वुफ़ी की दवाई लेने के लिए रवाना हुआ।

एक केमिस्ट उस समाज सेवी को कहते हैं जो दवाइयों की दुकान चलाता है। मोल माँ ने केमिस्ट को डॉक्टर रिशाला की पर्ची दिखाई और उसने मोल माँ को दवाई दी जिसके लिए मोल माँ ने उसे पैसे अदा किए।

अगले तीन दिनों तक मोल माँ याद से वुफ़ी के खाने में दावा की दो बूँदें डालती रहीं और जल्द ही वुफ़ी ठीक हो गया! "जाओ!" मोल चिल्लाया और वुफ़ी हवा की गति से अपनी पसंदीदा पीली गेंद के पीछे भाग पड़ा!

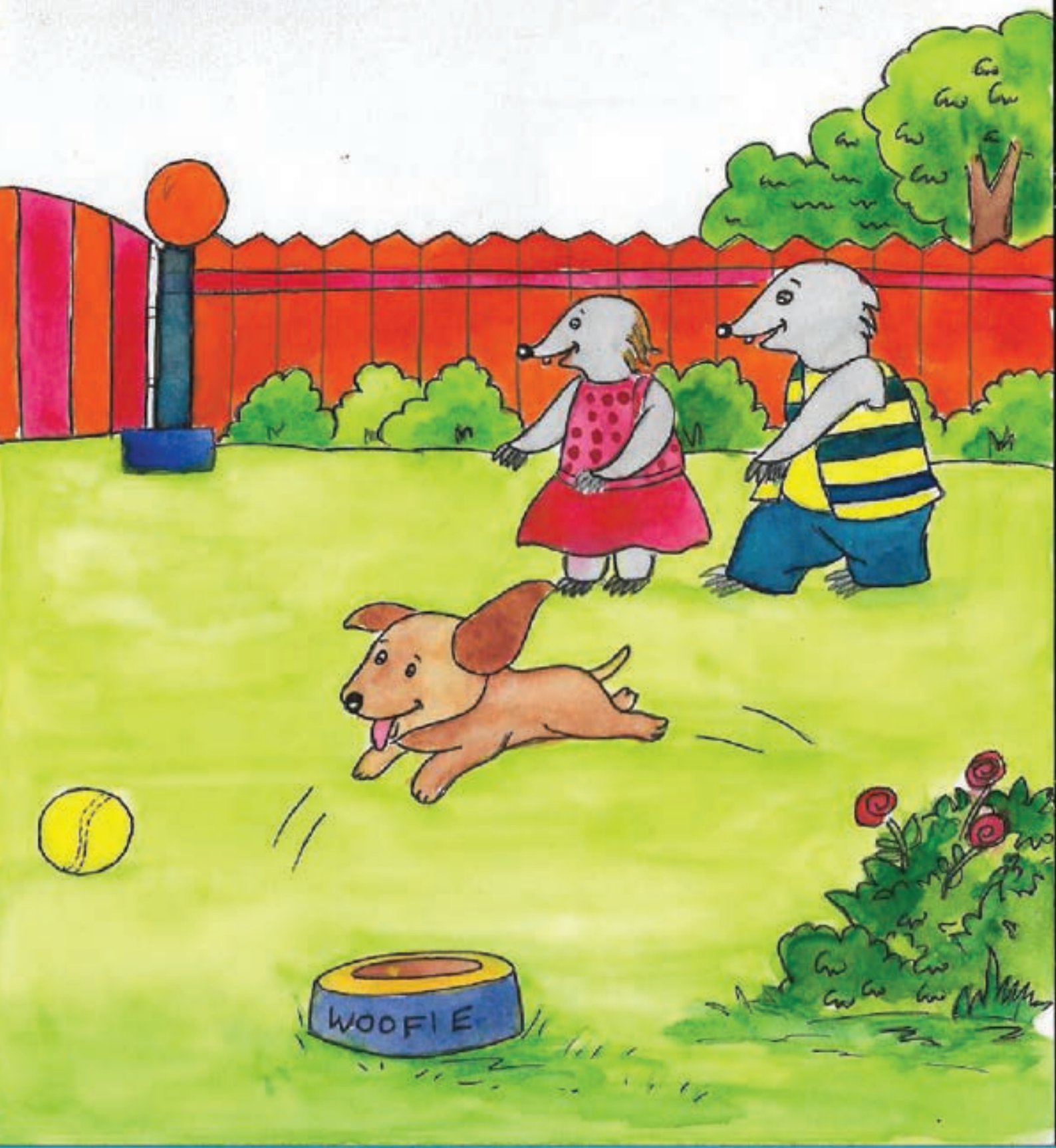

पुलिसवाले से लेकर बेकरी वाले तक, और फिर एक जानवरों के डॉक्टर तक भी, मोल बुक्स--मोल और पुलिस कि जुगलबंदी, बेकरी तक का सफ़र, वुफ़ी की मायूसी का कारण--तीन बेहतरीन कहानियाँ पेश करती हैं जिनका मुख्य किरदार, मोल, अपने अनुभवों के ज़रिए हमें समाज सेवियों के बारे में कुछ अहम बातें बता जाता है। इन रंगीन चित्रित पन्नों का सफ़र ज़रूर ही आपके बच्चों के चेहरों पर एक हसीन मुस्कान लेकर आएगा, और साथ ही साथ उनके मन में उठने वाले कई सवालों के जवाब देकर उन्हें शिक्षित भी करेगा।

मोल यह खोज निकालता है की आख़िर उसकी माँ के बग़ीचे से सब्ज़ियाँ कौन चुरा रहा है और फिर मदद के लिए पुलिस को बुलाता है। रुस्तम नानवाला मोल और उसकी बहन मोली को बेकरी के पीछे अपनी रसोई में बुलाकर उन्हें दिखता है कि बेकरी में बिकने वाली ब्रेड कैसे बनती है। तीसरी कहानी में वुफ़ी, मोल परिवार का पालतू, बीमार पड़ जाता है, तो मोल माँ, मोल और उसकी छोटी बहन मोली डॉक्टर रिशाला के पास जाते हैं, जो कि एक जानवरों की डॉक्टर हैं जो वुफ़ी को फिर से ठीक होने में मदद करती हैं!

यह किताब, मोल बुक्स के "समाज सेवी" संकलन का दूसरा भाग है जो नन्हे बच्चों को अपनी आस पास की दुनिया को लेकर उठने वाले सवालों को हल करने में मदद करती है। चमकीले चित्रण के साथ साथ यह उन लोगों की भूमिकाओं पर प्रकाश डालती है जो हमारे जीवन में एक अहम किरदार निभाते हैं। मोल...नन्हा मोल...बंदा है अनमोल...सिखाए सबको अच्छी बातें...बोले ऐसे बोल!

अरमान जे सर्ना, जिन्हें अपने स्कूल में "ऑरिजिनल मोल" के नाम से जाना जाता है, देहली (भारत) के एक मस्त-मौला दस वर्षीय छात्र हैं। इस ही अन्दाज़ और कल्पना शक्ति के चलते उन्होंने बच्चों की कहानियों के लिए मोल नामक नायक की कल्पना की है जिसके ज़रिए वे बच्चों के लिए अपने आप पास की दुनिया को जानने के सफ़र को आसन और मज़ेदार बनाने की अभिलाषा रखते हैं।

Copyright © 2016 Armaan J. Sarna.
All Rights reserved

ISBN 978-1-4828-7050-3
90000
9 781482 870503

PARTRIDGE